9

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुणों का कक्षा-कक्ष समायोजन के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

अश्वनी कुमार गौड़*

संतुलित व्यक्तित्व वाले व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी अपना समायोजन कर लेते हैं परंतु असंतुलित व्यक्तित्व वाले लोगों का समायोजन थोड़ा मुश्किल होता है इस परिस्थिति में व्यक्ति अपने कार्य में संपूर्णता नहीं ला पाता है। उक्त लेख में शोधार्थी ने प्राथमिक शिक्षकों के संदर्भ में यह जानने का प्रयास किया है कि कक्षागत परिस्थितियों में उनका व्यक्तित्व उनके समायोजन में किस तरह से सहायक है।

1. समस्या की उत्पत्ति

''व्यक्तित्व विभिन्न मनोदैहिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो व्यक्ति के वातावरण के प्रति अद्वितीय समायोजन को निर्धारित करता है।'' **आलपोर्ट** की इस परिभाषा से स्पष्ट है कि व्यक्तित्व से तात्पर्य उस प्रभाव से है जो अपने आचरण एवं व्यवहार से दूसरे व्यक्ति को आकर्षित करता है अथवा शीलगुण व्यवहार जैसे–प्रसन्नता, आत्मविश्वास, कर्तव्यनिष्ठता आदि से प्रभावित होकर उन्हें अपने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में स्थिर रूप से प्रकट करता है। इस प्रकार व्यक्तित्वशील गुणों में एक आकर्षण शक्ति होती है जो व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करते हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। समाज में रहकर व्यक्ति को विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन करने की आवश्यकता होती है जैसे–व्यक्तिगत, व्यावसायिक, सामाजिक, शैक्षिक क्षेत्र इत्यादि। इनमें से किसी भी एक क्षेत्र में यदि व्यक्ति समायोजन नहीं कर पाता तो उसका जीवन अत्यंत कठिन हो जाता है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए **डब्ल्यू.एफ.ब्रूस** ने भी कहा है– "व्यक्ति व्यक्तित्व के स्थायी संगठन के लिए असंतुलित वातावरण की अपेक्षा अपने भौतिक एवं सामाजिक वातावरण में उचित सामंजस्य स्थापित करें।"

* *रीडर(शिक्षा),शिक्षासंकाय*, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग, आगरा।

शिक्षा नीति का प्रमुख लक्ष्य है कि मानव जीवन का संपूर्ण विकास करना तथा व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना जिससे व्यक्ति परिवेश, पर्यावरण व समाज की परिवर्तित परिस्थिति में समायोजन कर सके और इस लक्ष्य की पूर्ति का केंद्र है अध्यापक, एक अच्छा अध्यापक वही हो सकता है जिसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हो चुका हो। व्यक्तित्व का संबंध शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक तीनों पक्षों से संबंधित क्रियाओं से है जिन्हें अध्यापकों को अपने विद्यालय में संपादित करना होता है इस कार्य में उनके व्यक्तित्वशील गुणों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

जायसवाल के शब्दों में – "अध्यापन कार्य एक प्रकार की कला है, एक सेवा है जिसमें वही आनंद मिलता है जो कलाकार को अपनी कला की साधना में मिलता है।" दूसरे शब्दों में अध्यापन कार्य एक ऐसा सृजनात्मक कार्य है जिसमें अध्यापक को विद्यार्थी के लिए वातावरण का सृजन करना होता है। व्यक्तित्वशील गुणों का संबंध व्यक्ति के भावनात्मक पक्ष से है। अध्यापक को कक्षा-कक्ष में बच्चों के साथ अंत क्रिया करनी होती है, विचारों को संप्रेषित करना होता है जिसका प्रभाव बच्चों के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीनों पक्षों पर पड़ता है। अध्यापक ऐसा तभी कर सकता है जब वह स्वयं में समायोजित हो। उदाहरणार्थ यदि अध्यापक कक्षा-कक्ष में अपना कार्य समय पर पूर्ण नहीं कर पा रहा है, वह कक्षागत परिस्थितियों के अनुकूल अपने को समायोजित नहीं कर पा रहा है वह अध्यापन कार्य कर रहा है लेकिन विद्यार्थी उसकी बात को समझ नहीं पा रहे हैं, उपर्युक्त उदाहरण अध्यापक के व्यक्तित्वशील गुणों के अभाव को दर्शाता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों के समायोजन की समस्या एक ज्वलंत समस्या है भले ही वे समायोजन उनके व्यक्तित्व के साथ हो या अपने कार्य के साथ। आज शिक्षा के विकास ने उच्च शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापकों की संख्या तो बढ़ा दी है किंतु उनको अपनी योग्यतानुसार विद्यालयों में अध्ययन के अवसर उपलब्ध नहीं हो पाए हैं ऐसे में उनके समायोजन का प्रश्न उठ खड़ा होता है कि क्या वे अपने व्यक्तित्वशील गुणों के साथ उचित समायोजन कर पा रहे हैं?

उक्त समस्या के समाधान हेतु शोधार्थी में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुणों का कक्षा-कक्ष समायोजन के परिप्रेक्ष्य में गहनता तथा विस्तार से अध्ययन करने की इच्छा जाग्रत हुई है।

2. समस्या का कथन

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुणों को कक्षा-कक्ष समायोजन के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन।

3. समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

प्राथमिक विद्यालय

ऐसे सरकारी व निजी विद्यालय जहाँ प्राथमिक स्तर पर कक्षा 1 से 5 तक 5 से 10 वर्ष तक की आयु के बालक-बालिकाओं को औपचारिक शिक्षा प्रदान की जाती हैं।

कार्यरत अध्यापक

कार्यरत अध्यापक से तात्पर्य उन व्यक्तियों से है जो वर्तमान में विद्यालयों में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

व्यक्तित्वशील गुण

व्यक्तित्वशील गुणों से अभिप्राय व्यक्ति के व्यवहार का वर्णन करने वाले उन संज्ञाओं से है जो व्यवहार की संगति एवं उपयुक्त अपेक्षाकृत स्थायी रूपों को अभिव्यक्त करते हैं जैसे– ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठता, समय की पाबंदी, सहयोग व सुसंस्कृत व्यवहार, आदर्शवादिता, अमूर्त चिंतन की योग्यता एवं चातुर्य इत्यादि शील गुण।

कक्षा-कक्ष समायोजन

समायोजन से अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसमें व्यक्ति वातावरण के साथ तादात्म्य स्थापित कर अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन से आशय शिक्षक वर्ग का विद्यालय विशेष के नियमों के अनुकूल अपने को ढाल लेना, पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रमोत्तर गतिविधियों में भाग लेना, उनसे संतुष्टि प्राप्त करना तथा कक्षा में सही ढंग से कार्य करना ही कक्षा-कक्ष समायोजन है।

4. अध्ययन के चर

स्वतंत्र चर – व्यक्तित्वशील गुण

आश्रित चर – कक्षा कक्ष समायोजन

5. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं-

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष एवं महिला अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुणों का कक्षा-कक्ष समायोजन के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत कम शिक्षण अनुभवी (0-2 वर्ष) एवं अधिक शिक्षण अनुभवी (2 से अधिक वर्ष) अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुणों का कक्षा-कक्ष समायोजन के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।
3. प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वांछित शैक्षिक योग्यता (इंटर, स्नातक, बी.टी.सी., एन.टी.टी.) एवं अधिक शैक्षिक योग्यता (परास्नातक, बी.एड., एम. एड, पी.एच.डी.) रखने वाले अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुणों का कक्षा-कक्ष समायोजन के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

6. अध्ययन की उपकल्पनाएँ

निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के परिप्रेक्ष्य में निम्नांकित उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया है-

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष एवं महिला अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुण कक्षा-कक्ष समायोजन के परिप्रेक्ष्य में भिन्न-भिन्न होंगे।
2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत कम शिक्षण अनुभवी (0-2 वर्ष एवं अधिक शिक्षण अनुभवी 2 से अधिक वर्ष) अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुणों में कक्षा-कक्ष समायोजन के परिप्रेक्ष्य में सार्थक अंतर होगा।
3. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत वांछित शैक्षिक योग्यता (इंटर, स्नातक, बी.टी.सी., एन.टी.टी.) एवं अधिक शैक्षिक योग्यता

(परास्नातक, बी.एड., एम. एड., पी.एच. डी.) रखने वाले अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुण कक्षा-कक्ष समायोजन के परिप्रेक्ष्य में भिन्न-भिन्न होंगे।

7. अध्ययन की परिसीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन को निम्नलिखित परिसीमाओं के क्रम में प्रस्तुत किया गया है–

1. प्रस्तुत अध्ययन में आगरा नगर के 20 निजी प्राथमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।
2. अध्ययन दो चरों यथा व्यक्तित्व गुण एवं कक्षा-कक्ष समायोजन तक सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में मात्र 100 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।

8. अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति को ध्यान में

अध्ययन का न्यादर्श

क्र.सं.	प्राथमिक विद्यालयों का नाम	महिला शिक्षक	पुरुष शिक्षक	कुल शिक्षक
1.	लाल बहादुर शास्त्री स्कूल	3	2	5
2.	प्रेम विद्यालय	3	1	4
3.	नव ज्योति विद्यालय	4	1	5
4.	आदर्श पब्लिक स्कूल	2	3	5
5.	सरस्वती शिशु मंदिर	1	4	5
6.	एम.पी.टी. स्कूल	4	2	6
7.	लवकुश विद्यालय	3	2	5
8.	शक्ति बाल विद्यालय	4	–	4
9.	श्याम पब्लिक स्कूल	3	1	4
10.	डॉली पब्लिक स्कूल	5	1	6
11.	सेंट नेल्सन स्कूल	5	–	5
12.	चंद्रा मांटेसरी स्कूल	4	–	4
13.	ओ.पी. पब्लिक स्कूल	4	2	6
14.	माया मार्डन पब्लिक स्कूल	5	–	5
15.	सेठ हरिदास स्कूल	6	–	6
16.	मीना मांटेसरी स्कूल	6	–	6
17.	विवेकानंद विद्या मंदिर	5	–	5
18.	आनंद पब्लिक स्कूल	6	–	6
19.	विजय मैमोरियल पब्लिक स्कूल	4	–	4
20.	सिटी कान्वेंट स्कूल	3	1	4
	योग	**80**	**20**	**100**

रखकर वर्णनात्मक अनुसंधान की आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

9. अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श को दो भागों में बाँटा गया है–

1. जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में आगरा नगर के 20 निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 200 अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है।

2. न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके जनसंख्या में निहित आगरा के प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत 200 शिक्षकों की एक वर्णाक्षर क्रम में एक सूची बनाई गई तथा उस सूची में से प्रत्येक दूसरे शिक्षक को न्यादर्श हेतु चयन किया गया है। इसे निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है–

इस प्रकार उपर्युक्त तालिका में दर्शायी गयी कुल जनसंख्या 200 में से चयनित 100 शिक्षक ही हमारा न्यायदर्श है।

10. अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. सोलह व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली – प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा प्रमापीकृत आर.बी. कैटिल (1967) द्वारा निर्मित 16 पी.एफ. फार्म 'ए' प्रश्नावली का हिंदी रूपांतरण (एस.डी. कपूर) प्रयोग किया गया है।
2. मंगल शिक्षक समायोजन सूची – शोधार्थी द्वारा अध्यापकों के समायोजन का मापन करने हेतु डॉ. ए.के. मंगल द्वारा निर्मित मंगल शिक्षक समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है।

11. अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित संबंधित प्रविधियों का प्रयोग किया गया है–

मध्यमान– मध्यमान का उपयोग औसत ज्ञात करने व अन्य सांख्यिकीय गणना के लिए किया गया है।

मानक विचलन– प्रदत्तों में निहित विचलनशीलता तथा विभिन्न समूहों की तुलना करने के संदर्भ में मानक विचलन का प्रयोग किया गया है।

टी परीक्षण– टी परीक्षण का प्रयोग दो मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच हेतु किया गया है।

12. शोध कार्य के निष्कर्षों की विवेचना

निष्कर्ष-1

उच्च समायोजित पुरुष एवं महिला अध्यापकों के कुल व्यक्तित्वशील गुणों एवं व्यक्तित्व कारकों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

विवेचना

उच्च समायोजित पुरुष एवं महिला अध्यापक कक्षा-कक्ष में समायोजित हैं किंतु दोनों समूहों के व्यक्तित्वशील गुणों के मध्यमान में अंतर यह स्पष्ट करता है कि पुरुष अध्यापक महिला अध्यापकों की अपेक्षा कक्षा में अधिक समायोजित हैं। इस बात की पुष्टि **एन. बालसुब्रमण्यन** द्वारा किए गए शोध अध्ययन से स्पष्ट होती है।

निष्कर्ष-2

औसत समायोजित पुरुष एवं महिला अध्यापकों के कुल व्यक्तित्वशील गुणों में सार्थक अंतर नहीं है। व्यक्तित्व कारक 'एफ' और 'ओ' में सार्थक अंतर है।

विवेचना

औसत समायोजित पुरुष एवं महिला अध्यापकों के कुल व्यक्तित्वशील गुणों में सार्थक अंतर नहीं है किंतु व्यक्तित्व 'एफ' और 'ओ' में सार्थक अंतर पाया गया है। दोनों समूह 'एफ' और 'ओ' व्यक्तित्व कारक में अधिक प्रभावशाली हैं। जिन अध्यापकों में उत्साह पूर्णता, स्वाभाविकता, प्रसन्नचित्तता गुण होते हैं वे कक्षा में प्रभावी रूप से समायोजित होते हैं। इस कथन की पुष्टि **डी.रामकृष्णन् तथा ई. मंजूवाणी** द्वारा किए गए शोध अध्ययन से भी स्पष्ट होती है।

निष्कर्ष-3

निम्न समायोजित पुरुष एवं महिला अध्यापकों के कुल व्यक्तित्वशील गुणों में सार्थक अंतर नहीं है। व्यक्तित्व कारक 'सी' और 'क्यू4' में सार्थक अंतर पाया गया।

विवेचना

निम्न समायोजित पुरुष एवं महिला अध्यापक कुल व्यक्तित्वशील गुणों से समान रूप से कक्षा-कक्ष में निम्न समायोजित हैं। किंतु दोनों वर्गों के मध्यमान अंतर से स्पष्ट होता है कि महिला अध्यापक पुरुष अध्यापकों की अपेक्षा अपने व्यक्तित्वशील गुणों से कक्षा में समायोजित है। पुरूष अध्यापक व्यक्तित्व कारक 'सी' और महिलाएं कारक 'क्यू4' में अधिक प्रभावशाली है क्योंकि संवेगात्मक रूप से स्थिर अध्यापक अपने कक्षा-कक्ष की गतिविधियों, पाठ्यक्रमोत्तर गतिविधियों में उचित समायोजित कर लेते हैं। इस बात की पुष्टि **डी. रामकृष्णन् एंड. ई. मंजूवाणी** द्वारा किए गए शोध अध्ययन से स्पष्ट होती है।

निष्कर्ष-4

उच्च समायोजित कम शिक्षण अनुभवी तथा अधिक शिक्षण अनुभवी अध्यापकों के कुल व्यक्तित्वशील गुणों में सार्थक अंतर नहीं है। व्यक्तित्व कारक 'ए', 'एफ', 'एल' और 'क्यू2' में सार्थक अंतर है।

विवेचना

कम शिक्षण अनुभवी तथा शिक्षण अनुभवी अध्यापक समान रूप से समायोजित है क्योंकि विद्यालय में लंबी अवधि से पढ़ाने के कारण व्यक्ति उन परिस्थितियों के साथ समायोजन कर लेता है और कम शिक्षण अनुभवी अध्यापक विद्यालय में अपना स्थान बनाने हेतु अधिक समायोजन करने का प्रयास करते हैं। व्यक्तित्व कारक 'ए' और 'क्यू2' में अधिक शिक्षण अनुभवी अध्यापक अपने व्यक्तित्वशील गुणों में अधिक प्रभावशाली है। इस बात की पुष्टि **लंग एमिली चिऊ चिया** द्वारा किए गए शोध अध्ययन से भी होती है।

निष्कर्ष-5

औसत समायोजित कम शिक्षण अनुभवी तथा अधिक शिक्षण अनुभवी अध्यापकों के कुल व्यक्तित्वशील गुणों में सार्थक अंतर नहीं है।

व्यक्तित्व कारक 'ई' और 'आई' कारक में सार्थक अंतर पाया गया।

विवेचना

औसत समायोजित कम शिक्षण अनुभवी एवं अधिक शिक्षण अनुभवी अध्यापक समान रूप से कक्षा में समायोजित है किंतु दोनों समूहों का मध्यमान अंतर यह स्पष्ट करता है कि कम शिक्षण अनुभवी अध्यापक अधिक शिक्षण अनुभवी अध्यापकों की अपेक्षा कक्षा में अधिक समायोजित हैं। व्यक्तित्व कारक 'ई' में कम शिक्षण अनुभवी तथा कारक 'आई' में अधिक शिक्षण अनुभवी अपने व्यक्तित्वशील गुणों में अधिक प्रभावशाली है।

निष्कर्ष-6

निम्न समायोजित कम शिक्षण अनुभवी तथा अधिक शिक्षण अनुभवी अध्यापकों के कुल व्यक्तित्वशील गुणों में सार्थक अंतर नहीं है। व्यक्तित्व कारक 'ए', 'ई', 'एच', 'ओ' और 'क्यू2' में सार्थक अंतर पाया गया।

विवेचना

कम शिक्षण अनुभवी एवं अधिक शिक्षण अनुभवी अध्यापक अपने व्यक्तित्वशील गुणों में समान रूप से प्रभावशाली है। क्योंकि समायोजन पर व्यक्तित्व कारकों के अतिरिक्त अन्य भौतिक कारकों का भी प्रभाव पड़ता है। जैसे, कक्षा-कक्ष में उपयुक्त परिस्थिति का अभाव, आवश्यक सामग्री का अभाव इत्यादि जिसके कारण दोनों समूहों का कक्षा में निम्न समायोजन है।

व्यक्तित्व कारक 'ई', 'एच' व 'क्यू2' में अधिक शिक्षण अनुभवी तथा 'ओ' कारक में कम शिक्षण अनुभवी अध्यापक प्रभावशाली है क्योंकि साहस, विश्वास प्रयोग करने की क्षमता शिक्षण में काफ़ी सहायक होती है। दोनों समूहों के मध्यमान अंतर से स्पष्ट हो जाता है कि अधिक शिक्षण अनुभवी अध्यापक अपने व्यक्तित्वशील गुणों में अधिक प्रभावशाली है। इस बात की पुष्टि **चेड स्मॉल** द्वारा किए गए अध्ययन से भी सिद्ध होती है।

निष्कर्ष-7

उच्च समायोजित वांछित शैक्षिक योग्यता एवं अधिक शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापकों के कुल व्यक्तित्वशील गुणों में सार्थक अंतर पाया गया। व्यक्तित्व कारक 'एच' में भी सार्थक अंतर पाया गया।

विवेचना

उच्च समायोजित वांछित शैक्षिक योग्यता एवं अधिक शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापकों के कुल व्यक्तित्वशील गुणों में .05 स्तर पर सार्थक अंतर है। अत: 95% विश्वास स्तर पर कहा जा सकता है कि वांछित शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापक अपने व्यक्तित्वशील गुणों से कक्षा में उच्च समायोजित है। क्योंकि उनको अपनी योग्यता अनुरूप रोजगार का अवसर मिला हुआ है जबकि अधिक शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापकों को अपने शैक्षिक योग्यता अनुरुप अवसर नहीं मिले हैं।

व्यक्तित्व कारक 'एच' में वांछित योग्यता प्राप्त अध्यापक अधिक प्रभावशाली होते हैं क्योंकि उत्साह, नवीन प्रयोग करने की क्षमता कक्षा में समायोजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका

निभाते हैं। इस बात की पुष्टि **ए. जोशी और पी. परीजा (2000)** के अध्ययन से भी होते हैं।

निष्कर्ष-8

औसत समायोजित वांछित शैक्षिक योग्यता एवं अधिक शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुणों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। व्यक्तित्व कारक 'ए', 'जी', 'एन' तथा 'क्यू2' में सार्थक अंतर पाया गया।

विवेचना

औसत समायोजित वांछित शैक्षिक योग्यता तथा अधिक शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापक अपने व्यक्तित्वशील गुणों से समायोजित है यही कारण है कि दोनों समूहों के मध्यमान में भी अधिक अंतर नहीं है इसके साथ ही व्यक्तित्व कारक 'ए' और 'एन' व 'क्यू2' में अधिक शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापक तथा 'जी' कारक में वांछित शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापक भी अधिक प्रभावशाली है।

निष्कर्ष-9

निम्न समायोजित वांछित शैक्षिक योग्यता एवं अधिक शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापकों के कुल व्यक्तित्वशील गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। व्यक्तित्व कारक 'बी' में सार्थक अन्तर पाया गया।

विवेचना

निम्न समायोजित दोनों समूह अपने व्यक्तित्वशील गुणों में समान हैं। किन्तु मध्यमान अन्तर से स्पष्ट होता है कि वांछित शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापक अपने व्यक्तित्वशील गुणों में अधिक प्रभावशाली है क्योंकि वे अपने कार्य स्तर से संतुष्ट है। बी कारक में अधिक शैक्षिक योग्यता प्राप्त अध्यापक अधिक प्रभावशील हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आसवाल, जी.एस., (1993) *शिक्षा मनोविज्ञान*, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
2. अग्रवाल, जे.सी., (1991) *एजूकेशन रिसर्च एन इंट्रोडक्शन* आर्य बुक डिपो, न्यू देहली।
3. बुच, एम.बी., (1974) *ए सर्वे ऑफ़ रिसर्च एन एजूकेशन फर्स्ट सर्वे*, सेंटर ऑफ़ एडवांसड स्टडी एन एजूकेशन, एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ़ बड़ौदा।
4. ब्लेयर ग्लेमन मेयर्स, जोन्स आर.स्टीवार्ट, सिंपसन रे.एच., (1965) *एजूकेशन साइकॉलोजी*, द मैकमिलन कंपनी, न्यूयार्क।
5. भट्टाचार्य, श्रीनिवास, (2000) *साइकॉलोजीकल फाउंडेशन ऑफ़ एजूकेशन*, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली।
6. बेस्ट, जॉन डब्ल्यू, (1963) *रिसर्च इन एजूकेशन*, प्रिंटस् हॉल ऑफ़ इंडिया, न्यू देहली।
7. चौबे, एस.पी. एण्ड, (1988) *एजूकेशन साइकॉलोजी*, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल, हॉस्पीटल रोड, आगरा।
8. गुड, सी.बी. एण्ड, (1963) *मैथड्स ऑफ़ रिसर्च*, एप्लीटोन सेंचुरी क्रा.फ्ट, न्यूयार्क।
9. ढोढ़ियाल एवं काव्क, (1972) *शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र*, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

10. कैटिल, आर.बी., (1945) *डिस्क्रपशन एंड मेजरमेंट ऑफ़ पर्सनेल्टी*, वर्ल्ड बुक कंपनी, न्यूयार्क।
11. कैटिल, आर.बी., (1991) *एडमिनिस्ट्रेटर्स मैनुअल ऑफ़ द 16 पर्सनेल्टी फैक्टर*, चैम्पेगन इल -इपाट।
12. गुड, कार्टर बी., (1954) *मैथड ऑफ़ रिसर्च, एपलीटन सैन्चुरी कोपटस*, न्यूयार्क।
13. गैरिट, एच.ई., (1970) *स्टेटिस्टिक्स इन साइकॉलोजी एंड एजूकेशन*, लागमेन ग्रीज एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क।
14. गुप्ता एस.पी. एंड, (2002) *शिक्षा मनोविज्ञान*, शारदा पुस्तक भवन 11 यूनिवर्सिटी रोड़, इलाहाबाद।
15. कपिल, एच.के., (1994) *सांख्यिकीय के मूल तत्व*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
16. कपिल, एच.के., (1981) *रिसर्च मैथड इन बिहेवियर साईंस*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
17. कोठारी, एफ.एन., (1990) *रिसर्च मैथडोलॉजी, विश्वा प्रकाशन*, न्यू देहली अंसारी रोड़, दरियागंज।
18. कर्लिंगर, एफ.एन., (2002) *फाउण्डेशन ऑफ़ बिहेवियरल रिसर्च*, सुरजीत पब्लिकेशंस, नयी दिल्ली।
19. मंगल, एस.के., (1987) *मैनुअल फ़ॉर मंगल टीचर एडजस्टमेंट एनवेंटरी*, नेशनल साइक्लॉजीकल कॉरपोरेशन, कचहरी घाट, आगरा।
20. राय, पारसनाय, (1996) *अनुसंधान परिचय*, सप्तम् संस्करण प्रकाशक लक्ष्मीनराण अग्रवाल, आगरा।
21. शर्मा, आर.ए., (1995) *शिक्षा अनुसंधान*, आर.बुक डिपो, मेरठ।
22. सिद्ध, एस.के., (1987) *मैथडोलॉजी ऑफ़ रिसर्च इन एजूकेशन इंटरलिंग*, पब्लिशर्स प्रा.लि, नयी दिल्ली।
23. यंग, पी.वी., (1996) *साइंटिफ़िक सोशल सर्वे एंड रिसर्च*, एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई।

❑❑❑